

॥ श्रीसीतारामचन्द्राभ्यां नमः ॥
॥ श्रीमते रामानन्दाचार्याय नमः ॥
॥ श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासाय नमः ॥
॥ श्रीमते अग्रदेवाचार्याय नमः ॥

॥ संहितोक्त धनुर्बाणाङ्कन प्रमाणः ॥

This text has been prepared by Vishal Pandey (B.Tech IIT Kanpur) with the blessings of
Chitrakūṭa Tulasīpīṭhādhiśvara Jagadguru Rāmānandāchārya Śrī Svāmī Rāmabhadrāchārya

सीतानाथ समारम्भां रामानन्दार्य मध्यमाम्।
अस्मदाचार्य पर्यन्तां वन्दे श्री गुरु परम्पराम्॥

संहितोक्त धनुर्बाणाङ्कन प्रमाणः

अगस्त्य संहितायाम्

अगस्त्य वाक्यं सुतीक्ष्णं प्रति।

वामे करे धनुः कुर्याद्दक्षिणे बाणमेव च।
रामायुधाङ्कितं दृष्ट्वाशिरसाप्रणमेत्तुयः।
षष्टिवर्ष सहस्राणि ब्रह्मलोके महीयते॥
या गतिर्योगयुक्तानां मुनीनां वीतरागिनाम्।
धनुर्बाणाङ्किते नैव सा गतिर्लभ्यते क्षणात्॥
बाहुमूले धनुर्बाणे नाङ्कितो राम किङ्करः।
शीतलेनाथ तप्तेन तस्य मुक्तिर्न संशयः॥
शीतलाच्छतगुणप्रोक्तं तप्तस्य परिधारणे।
अंकितास्सर्व कालेस्यश्चतुर्वणाश्रमादयः॥
चक्राच्छत गुणंप्रोक्तं फलं बाणादि धारणे।
सर्वेषां रामभक्तानां राम मुद्राभिधारणम्॥
नाङ्कितो चापबाणाभ्यां न मंत्रोस्तिषडक्षरः।
न नाम राम सम्बन्धि न रामोपासको भवेत्॥
मयावै प्रोच्यते पुत्र मुद्रामाहात्म्यमेव च।
स्वगात्रे धारयेद्योपि स रामोपासको महान्॥

श्रीअगस्त्य संहिता में श्रीअगस्त्यजी का वचन श्रीसुतीक्ष्णजी से है कि बायें हाथ में धनुष दक्षिण हाथ में बाण के चिन्ह को धारण करे। श्रीरामायुध धनुष बाण से अङ्कित पुरुष को देखकर जो शिर से प्रणाम करता है वह साठ हज़ार वर्ष ब्रह्मलोक में वास कर पूजित होता है॥ योगयुक्त वीतरागी मुनियों को जिस गति की प्राप्ति होती है वही गति धनुर्बाण के अङ्कित होने से क्षणमात्र में प्राप्त होती है॥ बाहु मूल में शीतल अथवा तप्त धनुर्बाण से अङ्कित जो श्रीरामभक्त है उसकी मुक्ति में कोई संशय नहीं है॥ शीतल की अपेक्षा तप्त धनुर्बाणादि धारण में सौ गुना अधिक फल होता है इस कारण चारो वर्ण तथा आश्रमों को तप्त धनुर्बाण से अङ्कित होना चाहिये॥ धनुर्बाणादि के धारण में शङ्ख चक्र से सौगुना अधिक फल है इसलिए समस्त श्रीरामभक्तों को अवश्य श्रीराममुद्रा ही धारण करना चाहिये॥ जो धनुर्बाण से अङ्कित नहीं है तथा जिसे षडक्षर श्रीराममंत्र प्राप्त नहीं है तथा श्रीराम सम्बन्धी नाम जिसका नहीं है वह श्रीरामोपासक नहीं हो सकता॥

महाशिव संहितायाम्

अगस्त्य वाक्यं सुतीक्ष्णं प्रति।

रामायुधाभ्यां तप्ताभ्यां सीतायाः मुद्रयासह।
अङ्किता ये महाप्राज्ञा नित्यमुक्ताश्च मुक्तिदाः॥
मुनेस्मिन्भारते वर्षे चाप बाणाङ्किता नराः।
स्वपरं कुलसाहस्रं तारयन्ति सुखेन वै॥
येषां कुलेतु एकोपि रामायुधयुतः सुधीः।
तेपियांति परंलोकं यत्र योग मखादिभिः॥
चिरं गताहि नरके पूर्वजा यस्य कस्य वै।
रामायुधाङ्किते वंशे तेपि यान्ति पराङ्गतिम्॥
चिरं गताहि नरके पूर्वजा यस्य कस्य वै।
रामायुधांकिते वंशे तेपि यांति पराङ्गतिम्॥

या गतिर्योग युक्तानां नैष्ठिकानां च न्यासिनाम् ।
दुर्लभां तां गतिं चैव प्राप्नोति धनुषाङ्कितः ॥
धनुषाङ्कित बाहुभ्यामर्चनं देव पितॄणाम् ।
तस्य ते पितृदेवाश्च गच्छन्ति परमं पदम् ॥
धनुः शरांकितोमर्त्यो यद्यत्कुर्याच्छुभंमुने ।
तत्तच्छतगुणं याति विपरीतेतुनिष्फलम् ॥
यस्य श्राद्धे च होमे च होतारो धनुषाङ्किताः ।
तस्यतेपितृदेवाश्च सुधां प्राश्नंति मोदिताः ॥
येषु श्राद्धेषु होमेषु न कोपि धनुषाङ्कितः ।
तत्रपिण्डाहुतिर्याति निष्फलत्वं न संशयः ॥
सीतायाः तप्तमुद्राञ्च श्रीरामस्यायुधेउभे ।
धारयन्भुवनं सद्यः पुनात्येव सुनिश्चितम् ॥

महाशिव संहिता में श्रीअगस्त्यजी का वचन सुतीक्ष्ण से है कि तप्त श्रीरामायुध धनुष बाण से तथा श्रीसीता मुद्रा से जो महाप्राज्ञ अङ्कित होते हैं वे नित्य मुक्त तथा दूसरों को मुक्ति देने वाले होते हैं ॥ हे मुने ! इस भारत वर्ष में जो धनुष बाण से अङ्कित हैं वे सुख से अपने तथा परायों के कुल को हज़ारहों पीढ़ी तक तार देते हैं ॥ जिनके कुल में एक भी कोई बुद्धिमान श्रीरामायुध धनुर्बाण से अङ्कित होता है उसके कुल के जन उस परलोक को प्राप्त होते हैं जहां पर योग यज्ञादि करने वाले जाते हैं ॥ जिस किसी के पूर्वज नर्क में बहुत दिन से पड़े हैं उनके वंश में एक भी धानुष बाण धारण करने वाले होने से वे सब परा गति को प्राप्त होते हैं ॥ जो गति योग युक्त नैष्ठिक तथा सन्यासियों की होती है उस दुर्लभ गति को धनुर्बाण के अङ्कित होने से प्राप्त होता है ॥ बाहु में धनुष बाण से अङ्कित होकर देवार्चन तथा पितृ तर्पण करते हैं उनके पितृगण परमपद को प्राप्त होते हैं ॥ धनुष बाण से अङ्कित मनुष्य जो शुभ कर्म करता है वह शतगुण अधिक फल देने वाला होता है

जो धनुर्बाण को नहीं धारण करते उनके कर्म निष्फल होते हैं॥ जिसके श्राद्ध तथा हवन में धनुष बाण से अङ्कित होने वाले रहते हैं उनके पितृ देवता प्रसन्न होकर अमृत भोजन करते हैं॥ जिनके श्राद्ध वा होम समय में धनुष बाण से अङ्कित कोई भी कर्म कराने वाला नहीं है उनका पिण्डदान तथा आहुति निष्फल है इसमें सन्देह नहीं॥ तप्त श्रीसीतामुद्रा तथा श्रीरामजी के आयुध धनुष-बाण धारण करने से सद्यः लोकों को पवित्र करता है यह सुनिश्चित है॥

महाशम्भु संहितायाम्

तुलस्यामाल तिलकं धनुर्बाणाङ्कितौ भुजौ।
राममंत्राभि नामाद्यः संस्काराः रामसेवके॥
श्रीरामस्यायुधौ तप्तौ राममंत्रं व्यधारयत्।
पञ्चाष्टादश संख्याता स्वसैन्याश्च हनुमतः॥
दीक्षितास्तेन मंत्रेण धनुर्वाणेन चांकिताः।
हनुमच्छिष्यतां प्राप्तो महाराजो विभीषणः॥
रामायुधाभ्यां तप्ताभ्यामंकितश्च समुद्रया।
तथा तस्य प्रजाः सर्वा चिह्निता राम लाञ्छनैः॥
श्रीरामस्यायुधौ तप्तौ जानकी मुद्रिकां विना।
पारमेष्ठ्यं न प्राप्नोति ज्ञानादि साधनैरपि॥
रामायुधाङ्कितश्चैव तनुं त्यजति यः पुमान्।
याभ्याश्चपार्षदास्तत्र नमन्तिशिरसाहितम्॥
युग्ममन्त्रत्रयं नित्यं धनुर्बाणौ च धारयेत्।
स जानकीवल्लभस्य सामीप्यं सुखमृच्छति॥

तुलसीमाला, तिलक, धनुर्बाण धारण, श्रीराममन्त्र, श्रीराम सम्बन्धी नाम ये पांच ही एक रामसेवक के परम आवश्यक संस्कार हैं॥ अठारह पद्म यूथपों ने भी श्रीहनुमानजी से दीक्षित होकर श्रीरामजी के आयुध तथा श्रीराम मंत्र को धारण किया ॥ महाराज विभीषण भी मुद्रा के सहित तप्त धनुष बाण वाले अङ्कित होकर श्रीहनुमानजी के शिष्यता को प्राप्त हुए और श्रीराम मंत्र लिया ॥ और उनकी सब प्रजा भी श्रीरामजी के चिन्हों से अङ्कित हुई॥ तप्त श्रीरामायुध तथा श्रीजानकी मुद्रिका के बिना ज्ञानादि साधनों से भी पारमेष्ठ्य पद को कोई प्राप्त नहीं कर सकता ॥ श्रीरामजी के आयुधों से अङ्कित हुआ जो पुरुष शरीर को छोड़ता है उस समय यमराज के दूत उसको आदर सहित शिर से प्रणाम करते हैं ॥ जो युगल मंत्र को तथा धनुष बाण को नित्य धारण करता है वह श्रीजानकीवल्लभजी के सामीप्य तथा सुख को प्राप्त होता है ॥

सदाशिव संहितायाम्

सौमित्रि वाक्यं वेदान्प्रति

सीताङ्कितो धनुर्बाणात् प्रथमं च महाशिवः ।
सीतयाचाङ्कितः पश्चाद्धनूमांश्च हरि प्रियः ॥
महाशम्भुः शिवं प्राह स शिवो नारदं तथा ।
नारदश्चाह वाल्मीकिं वाल्मीकिश्च कुशीलवौ ॥
हनूमांस्तु अगस्त्याय अगस्त्यश्च सुतीक्ष्णकम् ।
सुतीक्ष्णेन महाभागा चाङ्किता बहवो मुने ॥
विनाचिह्नं धनुर्बाणं विना मंत्रं षडक्षरम् ।
पूजां यश्च प्रकुर्वीत राघवो न प्रसीदति ॥

सदाशिव संहिता में भी लक्ष्मणजी का वचन वेदों से है कि पहले धनुर्बाण से अङ्कित सदाशिव को श्रीजानकीजी ने मंत्र दिया पश्चात् श्रीजानकीजी ने श्रीहनुमानजी को अङ्कित किया और मंत्र दिया ॥ इसमें दो शाखा चली एक यह महाशम्भु ने शिवजी को और शिवजी ने नारदजी को नारदजी ने वाल्मीकिजी को वाल्मीकिजी ने लवकुश जी को दिया ॥ दूसरी यह है श्रीहनुमानजी ने अगस्त्य जी को अगस्त्य जी ने सुतीक्ष्ण जी को सुतीक्ष्ण जी ने महाभाग्यशाली बहुत मुनियों को धनुष बाण से अङ्कित कर श्रीराम मंत्र दिया ॥ धनुर्बाण चिह्न के बिना तथा षडक्षर मंत्र के बिना जो पूजा करता है उसके ऊपर श्रीरामजी कभी प्रसन्न नहीं होते ॥

श्रीरामावतार हिन्दुधर्मोद्धारक यतिराजेश्वरेश्वर आचार्यचक्रचूड़ामणि
श्रीसम्प्रदायप्रवर्तक जगद्गुरु श्रीस्वामीरामानन्दाचार्य चरणाश्रित
कपिलावतार श्रीमद्योगानन्दाचार्यवंशोद्भव अखिलजगदोद्धारक
अनन्तश्रीसमलंकृत स्वामी प० श्रीरामवल्लभाशरण शिष्यशिष्यस्य
निखिलनिगमागमपुराणेतिहासशास्त्रपारावारपारीण
धर्मचक्रवर्ती प्रस्थानत्रयीराघवकृपाभाष्यकार
जगद्गुरुरामानन्दाचार्य पदलंकृत
श्रीस्वामीरामभद्राचार्य
कृपाकटाक्षाश्रित
सीतारामदासेन
संकलितः

॥ श्रीसीतारामचन्द्रार्पणमस्तु ॥